"लीला एक दिल की"

श्री राज जी महाराज ने वाणी में पहले ही कह दिया कि यह सारा ब्रह्मांड रूहों के लिए बना है यह बात सत्य सिद्ध हो रही है। परमधाम की नकल यहां उतर कर आई है। आज जितनी भी फिल्में बनती हैं वह दिल पर आधारित हैं, जैसे दिल, हम आपके दिल में रहते हैं, गीत संगीत दिल पर ही है। तभी तो इन्द्रावती जी ने कहा मुझे तो सारा ब्रह्मांड ही इश्कमई दिखाई दे रहा है क्योंकि इन्द्रावती जी के दिल में इश्क ही इश्क भरा है। आज हम किसी के दिल की बात को जानना चाहें तो उसकी ऊपर की बातों से दिल की गहराई नहीं जान सकते, उसके लिए हमें उसके दिल की गहराईयों में उतरना पड़ता है तभी तो दिल को सागर की उपमा दी गई है आज हम सागर की गहराई तो माप सकते हैं परन्तु उस सागर की तह में क्या छिपा है उसके लिए सागर की गहराई में गोता लगाना ही पड़ेगा। हम सागर के किनारे पर बैठकर लहरों को देखें तो लहरों का आनन्द अवश्य ही मिलेगा तैरते हुए घोंघे सीपीयाँ भी हाथ लग जाऐगें परन्तु कितने अनमोल मोती सागर में छिपे हैं उस अनमोल खजाने को पाना हैं तो अपने आपको सागर की गहराई में डुबकी लगानी ही पड़ेगी। राज जी के दिल में रूहों के लिए कितना लाड, प्यार, इश्क भरा है उसे पाना है तो केवल पाठ पढ़ने से नहीं बल्कि वाणी का गहन मंथन करना होगा। हक के इलम से रूह की नजर जब खुलेगी परमधाम के दीदार होंगे "हक इलम से होत है, अर्स बका दीदार" तब पता चलेगा कि परमधाम में एक ही दिल की लीला होती है जाहिरी में दोनों का वर्णन है।

वरनन होए इलम से, जो इलम हक का होए।
एक देखाऊं बातून में, जाहेर वरनवूँ दोए।।

परमधाम में स्वयं राजजी महाराज मारफत का स्वरूप हैं इसी कारण पूरे परमधाम को राज जी का दिल कहा गया है। राज जी के दिल में पूरा परमधाम समाया हुआ है, इसी दिल में सत्, चित् व आनंद है लेकिन तीनों एक ही स्वरूप हैं जैसे बट का बीज हो उसी में पूरा वृक्ष होता है उसे वृक्ष नहीं कहते जब उसमें से जड़ तना, पत्ते, फूल व फल निकलते हैं तो वृक्ष कहते हैं। राज जी महाराज अपने अंगों से लीला करते है इसी कारण से उन्हें स्वलीला अद्धैत पारब्रह्म कहते हैं जैसे समुन्द्र अपनी लहरों से, सूर्य किरनों से, हाथ ऊँगलियों से लीला करता है। परमधाम में एक ही दिल है उसे मारफत कहा गया है उसमें जो स्वरूप सत अंग अक्षर जिसे हकीकत, आनंद अंग श्यामा जी जिसे खिलवत कहा गया है उनमें जब लीला प्रगट होती है उसे वाहेदत की लीला अर्थात "एक दिल की लीला कहा गया" है। परमधाम में जो कुछ भी है वाहेदत का ही सवरूप है वाहेदत के बिना वहां कुछ भी नहीं है चौपाई से स्पष्ट है :-

Nijanand App

जो कछुए चीज अर्स में, सो सब वाहेदत मांहे।
जरा एक बिना वाहेदत, सो तो कछुए नांहे।।

वाहेदत दो तरह की है - सत की वाहेदत आनन्द की वाहेदत।

सत् की वाहेदत :- सत् अंग अक्षरब्रह्म जिन्हें हकीकत भी कहा गया है वह सत् की वाहेदत में आते है वह रहते परमधाम में है उनके अन्तःस्करण (मन, चित, बुद्धि तथा अहंकार) की लीला योगमाया के ब्रह्मांड में होती है।

परमधाम में जहां आनन्द की लीला होती हैं वहां सत्त की लीला नहीं हो सकती। अक्षरब्रह्म के मनस्वरूप अव्याकृत में स्थित सुमंगला शक्ति-पुरूष इस मिथ्याजगत की रचना तथा संहार करते है वह अपनी स्वाभाविक इच्छा से पल भर में करोड़ों ब्रह्मांडों की उत्पति करते हैं और नष्ट कर देते हैं उनकी लीला बालक की तरह है। अक्षरब्रह्म की अर्धांगिंनी महालक्ष्मी जी हैं यह लीला में उनका साथ नहीं देती परन्तु उनकी साहेबी रूहों जैसी है। इन्द्रावती जी कह रही हैं कि इस बात की जानकारी उन्हीं को है जिन्हें हक का इलम मिल गया है जिनकी परमआतम परमधाम में है। वाहेदत में एक होते हैं दो नहीं।

जैसी साहेबी रूहन की, विध लक्ष्मी जी भी इन।
वाहेदत में न तफावत, पर ए जानें रूहें अर्स तन।।

आनन्द की वाहेदत :- राज जी के दिल में आठों सागरों का रस है तभी उसे वाहेदत की मारफत कहते हैं। वही आठों सागरों का रस लीला में ओत-प्रोत होता है अर्थात् लीला होती है उसे *अर्स की हकीकत या वाहेदत की हकीकत कहते हैं।*

वाहेदत की मारफत :- वाहेदत की मारफत उसे कहते हैं जब हम राज जी की शोभा को देखते हैं उस शोभा में इतना खो जाते हैं कि हमें अपनी भी सुध नहीं रहती जैसे माशूक-आशिक के रोम रोम में समा जाता है दोनों इश्क में एक हो जाते हैं कोई नहीं बता सकता कि कौन आशिक? कौन माशूक? दोनों का दिल एक होता है। सागर ग्रंथ चौथा सागर श्री राजजी का सिनगार के मंगलाचरण में लिखा है जब श्यामा जी की आतम ने परमधाम में राज जी के किशोर स्वरूप को देखा वह उसमें इतना खो गईं उन्हें अपनी भी सुध न रही इसे वाहेदत की मारफत कहा गया है।

अर्स देख्या रूह अल्ला, हक सूरत किशोर सुन्दर।
कही वाहेदत की मारफत, जो अर्स के अन्दर।।

वाहेदत की हकीकत :- श्री राज जी का आनन्द अंग है श्यामा जी जिन्हें खिलवत कहा है जब उनसे लीला करते हैं तो वाहेदत होती है। स्वरूप की दृष्टि से रूहों को वाहेदत कहा गया है वाहेदत खिलवत के अन्दर है तभी तो कहा है 'श्यामा जी के अंग ही सुन्दरसाथ' इन्हीं अंगों को

Nijanand App

राज जी ने अपना तन कहा है क्योंकि इन्हीं तनों से वह इश्क और आनन्द की लीला करते है तभी कहा है "अर्स की खिलवत में हक की वाहेदत। रूहें जो वाहेदत का स्वरूप ह एक तन है, एक दिल है उनमें एक ही इश्क है।" श्यामा जी राज जी के अंग का नूर हैं, रूहें श्यामा जी के अंग का नूर हैं।

हक-अंग नूर हादी कहूया, मोमिन हादी अंग नूर।
ए सब हक वाहेदत, ज्यों हक नूर जहूर।।

हकीकत की लीला में श्री राज जी है श्यामा जी है रूहें है वहां आनन्द और इश्क की लीला होती है वहां उनके रहने के लिए, घूमने के लिए २५ पक्ष भी हैं जिसमें सात परिक्रमा है। 'रंगमहल', २. हौजकौसर पुखराज, फूलबाग बट पीपल की चौकी, ३. माणिक पहाड़, ४. ज्चेरों की नहरे, ५. वन की नहरें ६. छोटी रांग-चार हार हवेली, ७. आठ सागर, आठ जिमीं। इसकी गवाही श्यामा जी ने दी जब उन्होंने जमुना जी, हौज कौसर तालाब, बाग, जानवरों को देखा वहां राजजी, श्यामाजी व रूहों को देखा।

नदी ताल बाग जानवर, जो अर्स की हकीकत।
रूह अल्ला दई साहेदी, हक हादी खास उमत।।

परमधाम में हमें मारफत की पूर्ण पेहचान नहीं थी कि लीला में हम उसी मारफत के तन हैं जैसे हकीकत में लहरें उमड़ती हैं तो लहरें अपने आप को समुन्द्र से अलग समझने लगे इसी तरह रूहों ने अपने आपको जुदा समझा जिसके लिए कहा है "मैं हक अर्स में जुदा जानती" यहाँ पेहचान देने के लिए जब राजजी ने दिल में लिया तो अक्षरब्रह्म जिसे लीला में हकीकत कहा है वह प्रतिदिन जब राज जी तीसरी भोम के छज्जे पर बैठते है ७.३० बजे दर्शन के लिए केल पुल पार करके चांदनी चौंक में आते है थोड़े से मुखारनिन्द का दर्शन करके बट के पुल से वापिस अक्षरधाम चले जाते हैं उस दिन उसे दिल में ले लिया इसी कारण उसे पूरे मुखारबिन्द के दर्शन हुए और सखियों को भी देखा, सखियों ने भी अक्षरब्रह्म को देखा पूछा यह दूसरा पुरूष कौन है ? इधर मारफत से खिलवत का नाता टूटा- वाहेदत का खिलवत से टूटा दोनों नें अपने - अपने इश्क को बड़ा कहा फिर खिलवत को दिल में लिया दोनों ने मिल कर इश्क को बड़ा कहा। राज जी ने कहा भले ही आप सबका इश्क बड़ा है पर आशिक मैं हूं। तीन बजे राज जी ने श्यामा जी से कहा सखियों से पूछो आज कहां चलना है ? तब सखियों ने कहा हमें हकीकत का खेल देखना है तब राज जी ने सारी हकीकत बताई जहां झूठ ही झूठ है फरेब ही फरेब है जिस इश्क के बल पर यहां कूद रही हो वहां जा कर न सुध रहेगी न अकल तुम मुझे वहां जा कर भूल जाओगी। सखियों ने कहा - आप लाख बार अजमा कर देखो हम नहीं भूलेंगी।

ऐसी क्यों होवे हमसों, ऐसी क्यों होवे बेसुध हम।

Nijanand App

खेल फरेब लाख देखिए, पर क्यों भूलिए इन खसम।।

राज जी ने मूल-मिलावा में सखियों को अपने चरणों के तले बिठाया उनकी परआत्म की नजर को दिल में ले कर सुरता को बृज में सखियों के अन्दर डाला स्वयं श्री कृष्ण का तन जहां अक्षर की आतम थी आवेश स्वरुप में आए ११ साल ५२ दिन की लीला दिखाकर रास में ले गए वहां अक्षर की इच्छा पूरी की जब सखियों और अक्षर को लीला में मगन देखा तब जोश खैंचा अक्षर चौंके सखियां भी व्याकुल हुईं तब राज जी नए सिनगार करके आए, सखियों से लीला की, फिर वापिस घर गए। धनी की पेहचान तो हुई पर घर की सुध नहीं हुई इसी कारण जागनी के ब्रह्माण्ड में आए क्योंकि सखियों की आधी इच्छाएं पूरी नहीं हुई थीं। श्यामा जी के अन्दर राज जी बैठे बृज व रास की चर्चा हुई पर निसबत की पेहेचान न होने के कारण कहा जागनी मुझसे करवाओ। इन्द्रावती के तन में हवसा में जाहिर हुए वाणी उतरी। मेड़ता में महमंद भी जब अन्दर आ गए तो पूर्ण सच्चिदानंद श्री जी साहेब कहलाए, तब सनन्ध, खुलासा, खिलवत, परिक्रमा, सागर, सिनगार सिंधी की वाणी उतरी। हमारी निसबत के कारण ही मारफत खिलवत, वाहेदत व हकीकत की पेहेचान कराई तभी तो कह रहे हैं मैं तुम्हारी निसबत की खूबी की कैसे कहूँ? खूबी क्यों कहूं निसबत की, वास्ते निसबत खुली हकीकत तो पाई हक मारफत, जो थी हक निसबत।।

श्री राज जी महाराज अपने ही अंगों को उनकी निसबत अपने पूर्ण स्वरूप की पेहचान करा रहे हैं और कह रहे हैं, रूहो। मैंने तुम्हारे लिए ही सागर ग्रंथ में ३ बार श्री राजजी, २ बार श्यामा जी एक बार रूहों की शोभा बता दी है सिनगार ग्रंथ में ४ बार शोभा का वर्णन कर दिया है फिर भी तुमने अपने दिल में फरेब को ले रखा है यह भी समझा दिया हे कि यह माया कुछ भी नहीं है सपना है खेल के कबूतर की तरह है फिर भी हम राजजी को भूल बैठे हैं वह इश्क हमारा कहां चला गया जो एक पल की जुदाई सहन नहीं करता था। राजजी कह रहे हैं मैं तो तुम्हारे से एक पल के लिए भी दूर नहीं हूँ मैं तो सेहेरग से भी नजदीक हूँ तुम्हारे दिलों को अर्स किया है पर उसी दिल में तुमने माया को बिठा रखा है। यही माया तुम्हारे और मेरे बीच में पर्दा है इसी कारण से राजजी के मुखरबिन्द को देखने के लिए उनसे बातें करने के लिए, सुनने के लिए हमारे कान नहीं दौड़ते वह इश्क कहां चला गया है।

सुनने कान न दौड़त, मासूक मुख की बात।
इस्क न जाने कहां गया, जो था मासूक सो दिन रात।।

अब हमने माया को पीठ देकर उसी दिल में उसी शोभा को बसाना है जो शोभा परआत्म में बसी है परमधाम में जो एक दिल है वही एक दिल यहां करना है।

श्रीमती किरन मेहता,
देहली

Nijanand App